SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

समावेशी विद्यालयों के शिक्षको में दिव्यांगता सम्बन्धित जागरुकता का अध्ययन

राजेश्वरी गर्ग, (Ph.D.), शिक्षा विभाग,
राजन पटेल, शोधार्थी, शिक्षा विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
राजेश्वरी गर्ग, (Ph.D.), शिक्षा विभाग,
राजन पटेल, शोधार्थी, शिक्षा विभाग,
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/07/2022
Revised on : -----
Accepted on : 27/07/2022
Plagiarism : 00% on 20/07/2022

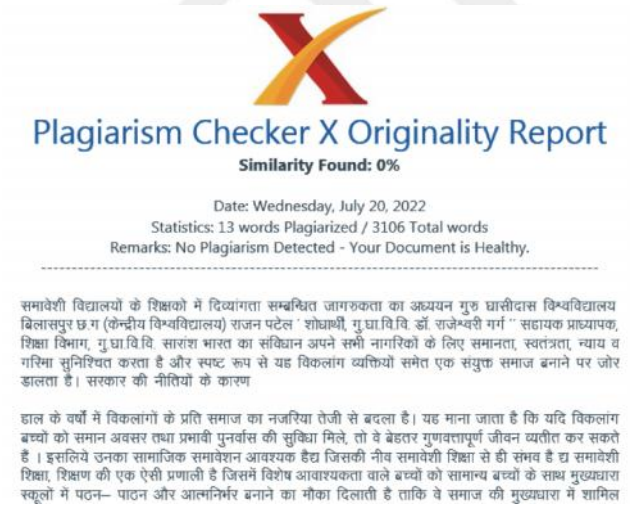

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 0%

Date: Wednesday, July 20, 2022
Statistics: 13 words Plagiarized / 3106 Total words
Remarks: No Plagiarism Detected - Your Document is Healthy.

समावेशी विद्यालयों के शिक्षको में दिव्यांगता सम्बन्धित जागरुकता का अध्ययन गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर छ.ग (केन्द्रीय विश्वविद्यालय) राजन पटेल ' शोधार्थी, गु.घा.वि.वि. डॉ. राजेश्वरी गर्ग " सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, गु.घा.वि.वि. सारांश भारत का संविधान अपने सभी नागरिकों के लिए समानता, स्वतंत्रता, न्याय व गरिमा सुनिश्चित करता है और स्पष्ट रूप से यह विकलांग व्यक्तियों समेत एक संयुक्त समाज बनाने पर जोर डालता है। सरकार की नीतियों के कारण

हाल के वर्षों में विकलांगों के प्रति समाज का नजरिया तेजी से बदला है। यह माना जाता है कि यदि विकलांग बच्चों को समान अवसर तथा प्रभावी पुनर्वास की सुविधा मिले, तो वे बेहतर गुणवत्तापूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं । इसलिये उनका सामाजिक समावेशन आवश्यक हैद्य जिसकी नीव समावेशी शिक्षा से ही संभव है द्य समावेशी शिक्षा, शिक्षण की एक ऐसी प्रणाली है जिसमें विशेष आवाश्यकता वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ मुख्यधारा स्कूलों में पठन– पाठन और आत्मनिर्भर बनाने का मौका दिलाती है ताकि वे समाज की मुख्यधारा में शामिल

शोध सार

भारत का संविधान अपने सभी नागरिकों के लिए समानता, स्वतंत्रता, न्याय व गरिमा सुनिश्चित करता है और स्पष्ट रूप से यह विकलांग व्यक्तियों समेत एक संयुक्त समाज बनाने पर जोर डालता है। सरकार की नीतियों के कारण हाल के वर्षों में विकलांगों के प्रति समाज का नजरिया तेजी से बदला है। यह माना जाता है कि यदि विकलांग बच्चों को समान अवसर तथा प्रभावी पुनर्वास की सुविधा मिले, तो वे बेहतर गुणवत्तापूर्ण जीवन व्यतीत कर सकते हैं इसलिये उनका सामाजिक समावेशन आवश्यक है, जिसकी नीव समावेशी शिक्षा से ही संभव है। समावेशी शिक्षा, शिक्षण की एक ऐसी प्रणाली है जिसमें विशेष आवाश्यकता वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ मुख्यधारा स्कूलों में पठन– पाठन और आत्मनिर्भर बनाने का मौका दिलाती है ताकि वे समाज की मुख्यधारा में शामिल हो सके। इसके तहत पठन– पाठन के अलावा विकलांग बच्चों के लिए बाधा रहित स्कूली माहौल का निर्माण कार्य भी शामिल है। इस अध्ययन का उद्देश्य समावेशी विद्यालयों के शिक्षको में सम्बन्धित दिव्यांगता जागरुकता सबंधित किये गये शोध कार्यों का अध्ययन करना है। शोध के परिणाम में पाया गया कि शिक्षकों में विकलांग बच्चों के सहायक उपकरण, अध्यापन पद्धति, अध्यापन सामाग्री, सम्प्रेषण माध्यम, मूल्यांकन संबन्धित जागरूकता का अभाव है। जिनमें समावेशी विद्यालयों के शिक्षको में दिव्यांगता सम्बन्धित जागरुकता पायी गयी।

मुख्य शब्द

समावेशी विद्यालय, समावेशी विद्यालयों के शिक्षक, दिव्यांगता, जागरुकता.

प्रस्तावना

भारतीय संविधान में समता, स्वतन्त्रता, सामाजिक, न्याय एवं व्यक्ति की गरिमा को प्राप्त मूल्यों के रूप में निरूपित किया गया है। हमारा संविधान जाति, वर्ग, धर्म, आयु एवं लैंगिक आधार पर किसी भी प्रकार के विभेद का निषेध करता है। लोकतांत्रिक समाज की स्थापना के लिए हमारे संवैधानिक मूल्य स्पष्ट दिशानिर्देश प्रदान करते है और इस प्रकार समावेशी समाज की स्थापना का आदर्श प्रस्तुत करते हैं। इस परिप्रेक्ष्य में बच्चों को सामाजिक, जातिगत, आर्थिक, वर्गीय, लैंगिक, शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से भिन्न देखे जाने के बजाय एक स्वतंत्र अधिगमकर्ता के रूप में देखे जाने की आवश्यकता है, जिससे लोकत्रांतिक समाज में बच्चे के समुचित समावेशन हेतु वातावरण का सृजन किया जा सके। समावेशन की ठोस प्रक्रिया प्रतिकात्मक लोकतन्त्र का मार्ग प्रशस्त है।

अधिकारों के सन्दर्भ में विकलांगों को भी समावेशन का अधिकार प्राप्त है जिससे कि वह समाज और अपने समुदाय के सहयोग में भाग ले सके और उसे भी समाज का अंग समझा जाए।

समावेशी शिक्षा

समावेशी शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा प्रणाली से है जिसमें कि प्रत्येक बालक को चाहे वो विशिष्ट हो या सामान्य बिना किसी भेदभाव के, एक साथ, एक ही विद्यालय में, सभी आवश्यक तकनीकों व सामग्रियों के साथ, उनकी सीखने के जरूरतों को पूरा किया जायें (कुमार संजीव, 2008)। युनेस्को अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक सम्मेलन के अनुसार, "समावेशी शिक्षा अधिगमकर्ताओं के गुणात्मक शिक्षा के मौलिक अधिकार पर आधारित है जो आधारभूत शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करके जीवन को समृद्ध बनाती है। अति संवेदनशील एवं सीमान्त समूहों को दृष्टिगत रखते हुए, यह प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता का पूर्ण विभेदीकरण (Decriminalized) को समाप्त करके सामाजिक संगठन का पोषक करना है।"

अंतर्राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य

विकलांग व्यक्तियों के लिए 1993 में संयुक्त राष्ट्र के अंतिम कार्य दशक में और अगले वर्ष में सलामांका वक्तव्य में समावेशी शिक्षा का एक अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। चूंकि यूरोपीय संघ सहित कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा इस लक्ष्य की पुष्टि की गई है। 2006 में इस सिद्धांत को अंतरराष्ट्रीय कानून का रूप दे दिया गया, जिसमें विकलांग बच्चों के अधिकारों को कन्वेंशन में शामिल किया गया था। सलामांका वक्तव्य द्वारा समावेशी शिक्षा का मतलब है कि सभी बच्चों को एक साथ सीखना चाहिए, भले ही वे किसी भी कठिनाइयों या मतभेदों के बावजूद उनकी अलग–अलग जरूरतों को स्वीकार कर सकें और पर्याप्त रूप से जवाब दे सकें।

सालमानका सम्मेलन 1990

समावेशी शब्द का प्रचलन 1990 के दशक के मध्य से बढ़ा है, जब 1994 में सालामानका स्पेन में यूनेस्को द्वारा विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं पर विशेष विश्व सम्मेलन सुलभता और समता का आयोजन हुआ। इस सम्मेलन में 92 सरकारों और 25 अंतर्राष्ट्रीय संगठनो ने हिस्सा लिया।सम्मेलन का समापन इस उद्घोषणा के साथ हुआ कि "प्रत्येक बच्चे की चरित्रगत विशिष्टताए, रुचियाँ, योग्यता और सीखने की आवश्यकताए अनोखी होती हैं।" इसलिए शिक्षा प्रणाली में इन विशिष्टताओं और आवश्यकताओं की व्यापक विविधता का ध्यान रखना चाहिए।

सलमांका वक्तव्य में इस बात पर बल दिया गया है कि "हर शिशु को शिक्षा का बुनियादी अधिकार है और उसे अधिगम का एक स्वीकार्य स्तर प्राप्त करने और बनाये रखने का अवसर दिया जाना चाहिए।"

डाकर (सेनेगल) सम्मेलन 2000

विश्व शिक्षा मंच (डाकर, सेनेगल, 26–28 अप्रैल 2000) नई शताब्दी की शुरुआत में शिक्षा का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम था। डकार फ्रेमवर्क को अपनाने के लिए, मंच में 1,100 लोगों ने वर्ष 2015 तक सभी के लिए शिक्षा प्राप्त करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की और सभी ने वैश्विक गति को बनाए रखने की पूरी जिम्मेदारी के साथ यूनेस्को को सौंपा।

सलमांका वक्तव्य के बाद डाकर (सेनेगाल) में वर्ष 2000 में आयोजित विश्व शिक्षा मंच (World Education Forum) पर भी शिक्षा में समावेश की बात दुहरायी गयी। डाकर सम्मेलन में स्पष्ट किया गया कि, किसी व्यक्ति या बच्चों को उच्च कोटि की प्राथमिक शिक्षा पूर्ण करने के अवसर से केवल इसलिए वंचित नहीं किया जाना चाहिए कि वह सामर्थ्य से परे है। विशेष आवश्यकता वाले अभावग्रस्त उपजातीय (Ethnic) अल्पसंख्यकों के दूरदराज के और अलग दृअलग समुदायों के तथा शिक्षा से वंचित नागरीय व दूसरे लोगों का समावेश वर्ष 2015 तक सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा की प्राप्ति की रणनीतियों का अभिन्न अंग होना चाहिए (यूनेस्को 2000/15) (कुमार संजीव, 2008)।

भारतीय परिप्रेक्ष्य

शैक्षिक जगत में समावेशी शिक्षा की अवधारणा स्पष्ट होने के पहले भारत में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षा–दीक्षा विशेष विद्यालयों में विशेष पाठ्यक्रमों के जरिये दी जाती थी, ऐसी शिक्षा प्रणाली को विशिष्ट शिक्षा प्रणाली कहलाती है। इसके बाद एकीकृत शिक्षा प्रणाली की अवधारणा सामने आयी।

विशेष आवश्यकता वाले बच्चे समाज के अभिन्न अंग है, इस बात का अहसास कराते हुए नीति–निर्माताओं ने विकलांग बच्चों को शिक्षित करने की वकालत की है जो निम्नलिखित हैः

सार्जेन्ट रिपोर्ट (1944)

दृष्टि हीन, बधिर, मानसिक व शारीरिक रूप से निःशक्त बच्चे/व्यक्तियों को शिक्षा सम्बन्धी विशेष बंदोबस्त की आवश्यकता है, इनमें विशेष प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए केंद्रीय संस्थाओं की स्थापना आवश्यक है।

कोठारी आयोग (1964–66)

कोठारी आयोग के अनुसार 'एक विकलांग बच्चे के लिए शिक्षा का पहला कार्य यह है कि सामान्य बच्चों की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए बनाए गए सामाजिक–सांस्कृतिक पर्यावरण में सामंजस्य के लिए उसे तैयार करे। इसलिए आवश्यक है कि विकलांग बच्चों की शिक्षा सामान्य शिक्षा प्रणाली का ही एक अभिन्न अंग है। अंतर केवल उनके बच्चों को पढ़ाने की विधि और बच्चों द्वारा ज्ञान प्राप्ति के लिए अपनाये गये साधनों में होगा'(शिक्षा आयोग 1966/123)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)

इस नीति में कहा गया है कि "शिक्षा सबके लिए तभी मायने रखती है जब विकलांग बच्चों को भी शिक्षा का अवसर दिया जाए।"

सर्व शिक्षा अभियान (2001–02)

'समावेशी शिक्षा' भारत की शैक्षिक शब्दावली में अभी कुछ वर्षो पहले जोड़ा गया हैं। समावेशी शिक्षा को सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत शामिल किया गया। इसके अंतर्गत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, कार्यात्मक और औपचारिक जाँच, सहायक उपकरण, सहायक सेवाएं, शैक्षिक स्थापना (Educational Placement), गैर–औपचारिक तथा वैकल्पिक स्कूली शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा तथा अधिगम, अध्यापक प्रशिक्षण, संसाधन सहायता, वैयक्तिक शैक्षिक योजना, गृह आधारित शिक्षा, अभिभावक प्रशिक्षण, परिभ्रामी शिक्षक, समुदाय आधारित पुनर्वास, व्यवसायिक शिक्षा तथा सहकारी कार्यक्रम, बाधा–मुक्त वातावरण, आदि कार्यक्रम शामिल हैं (कुमार संजीव, 2008)।

मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार ने जम्मू–कश्मीर को छोडकर पूरे भारत के सभी जनपदों में विकलांग बच्चों हेतु इस अभियान की शुरुआत 2002 में की। इस योजना के अंतर्गत सभी तरह के विकलांग बच्चों को सामान्य विद्यालयों में सामान्य बच्चों के साथ निरूशुल्क शिक्षा व उपकरण आदि प्रदान किया जाएगा। विकलांग बच्चों को पढ़ाने हेतु कार्यरत शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। इस योजना के अंतर्गत 0–18 आयु तक के बच्चों को शामिल किया गया है (कुमार संजीव, 2008)।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020

नई 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020' सभी के लिए एकसमान व समावेशी शिक्षा के संकल्प के कारण भी विलक्ष्ण व विशेष है । 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020' शिक्षा को पूरी तरह सही ढंग से 'सामाजिक न्याय व गुणवत्ता' हासिल करने के एकल महानतम उपागम के तौर पर देखती है। समावेशी व न्यायपूर्ण शिक्षा सचमुच अपने–आप में ही एक आवश्यक लक्ष्य है तथा एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था प्राप्त करने हेतु भी महत्त्वपूर्ण है, जहां प्रत्येक नागरिक के लिए ''सपने देखने, प्रफुल्लित होने व राष्ट्र में योगदान देना आदि सुअवसर'' प्रदान करता हूँ। यह सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण, किफ़ायती व नैतिक शिक्षा के पथ में आने वाले विविध सामाजिक व आर्थिक अवरोध दूर करने की ओर महत्वपूर्ण कदम है।

अध्ययन की आवश्यकता

समावेशी विद्यालयों के शिक्षकों की दिव्यांगता से संबंधित जागरूकता का अध्ययन करना अति आवश्यक है। कोई भी कार्य या योजना की सफलता उसकी जागरूकता पर निर्भर करता है, जागरूक लोगों में योजना संचालित करने से आपेक्षित उद्देश्य को प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि जागरूक लोगों द्वारा उसे सुचारू रूप से सफल बनाया जा सकता हैं। उसी प्रकार से समावेशी शिक्षा को धरातल पर लाने के लिए विकलांगता से संबंधित जागरूकता का अध्ययन करना अनिवार्य है, बिना अध्ययन किए समावेशी शिक्षा को प्रभावशाली रूप में नहीं लाया जा सकता है। अध्ययन के परिणामस्वरुप ही समावेशी शिक्षा संबंधित योजना बनाया जा सकता है और उसे प्रभावशाली रूप से संचालित किया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने पर विशेष बल दिया गया है।

समावेशी शिक्षा में विभिन्न दिव्यांगता का समावेशन

विकलांग व्यक्तियों के अधिकार अधिनियम (RPWD) बिल के अंतर्गत निम्नलिखित अक्षमता से ग्रस्त व्यक्तियों को भी विकलांगों की श्रेणी में रखा गया है, जिसमे कुल 21 विकलांगाता को शामिल किया गया है:

1. अंधा (Blind)
2. कम दृष्टि (Low&vision)
3. कुष्ठ रोग मुक्त व्यक्ति (Leprosy Cured persons)
4. श्रवण अक्षम [Hearing Impairment (deaf and hard of hearing)]
5. चलन निःशक्त (Locomotor Disability)
6. बौनापन (Dwarfism)
7. बौद्धिक अक्षमता (Intellectual Disability)
8. मानसिक रुग्ण (Mental Illness)
9. ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिस्ऑर्डर (Autism Spectrum Disorder)
10. प्रमस्तिष्क घाट (Cerebral Palsy)
11. मांसपेशीय दुर्विकास (Muscular Dystrophy)
12. क्रोनिक न्यूरोलॉजिकल स्थिति (Chronic Neurological conditions)
13. विशेष अधिगम अक्षमता (Specific Learning Disabilities)
14. मल्टीपल स्क्लेरोसिस (Multiple Sclerosis)
15. वाणी एवं भाषा अक्षमता (Speech and Language disability)
16. थेलेससेमिया (Thalassemia)
17. हेमोफिलिया (Hemophilia)
18. सिकल सेल डिसीस (Sickle Cell disease)

19. मल्टीपल डिसएबिलिटीज़ इन्क्लुडिंग डेफब्लाइंडनेस (Multiple Disabilities including deafblindness)
20. एसिड अटैक विक्टिम (Acid Attack victim)
21. पार्किन्सन डिसीज (Parkinson's diseas)

अध्ययन का उद्देश्य

समावेशी विद्यालयों के शिक्षको में दिव्यांगता सम्बन्धित जागरुकता का अध्ययन करना।

संबन्धित साहित्य का अध्ययन

गंधिमाथि, यु.एंड एल्जो, जे. ओ. (2010) अवरेनेस अबाउट लर्निंग डिसएबिलिटीज़ एमंग द प्राइमरी स्कूल टिचर्स, के तिरुवेरुंबूर ब्लॉक के तिरुचिरप्पाल्ली के 80 सरकारी और गैर–सरकारी स्कूलो को शामिल किया गया। अध्ययन से पाया गया कि 66.2 प्रतिशत शिक्षकों को अधिगम अक्षमता के बारे मे जानकारी नहीं है। गतेरु, डब्लू. ए. (2011), टिचर्स अवरेनेस एंड इंटरवेंशन फॉर प्राइमरी स्कूल प्युपिल्स विथ लर्निंग डिसएबिलिटीज़ इन इंक्लूसिव एजुकेशन इन कन्या के 10 प्राथमिक स्कूलों के 30 शिक्षकों को शामिल किया गया। अध्ययन में पाया गया कि 68 प्रतिशत शिक्षकों को समावेशी शिक्षा के अर्थ को जानते है, 63 प्रतिशत शिक्षकों को समवेशी शिक्षा के अभ्यास के बारे मे जानकारी है, 79 प्रतिशत शिक्षकों को अधिगम अक्षम बच्चों की पहचान करने में सक्षम है। शिक्षकों में अधिगम अक्षम बच्चों को पढ़ाने के विधि के बारे में जानकारी थी। 71 प्रतिशत शिक्षकों को अधिगम अक्षम बच्चों की देख–भाल करने में असमर्थ हैं। समावेशी शिक्षा में पढ़ाने के लिए 57 प्रतिशत शिक्षकों को दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। कैवान. के. एट आल. (2012), दी स्टडि ऑफ अवरेनेस एंड कैपेसिटी ऑफ प्राइमरी स्कूल टीचर इन आइडेंटीफायिंग स्टूडेंट विथ लर्निंग डिसएबिलिटीज़इन द प्रोविंस ऑफ़ केमंशाह (ईरान), इस अध्ययन में कुल 291 प्राथमिक स्कूल के शिक्षकों को शामिल किया गया था। अध्ययन में पाया गया की 50 प्रतिशत शिक्षकों में अधिगम अक्षमता की प्रकृति के बारे में जानकारी थी। दापुदोंग, आर. सी. (2013), नॉलेज एंड एटित्युड टुवर्ड्स इन्क्लूसिव एजुकेशन ऑफ़ चिल्ड्रेन विथ लर्निंग डिसएबिलिटीज़: द केस ऑफ़ थाईलैंड प्राइमरी स्कूल टीचर्स। इस अध्ययन में थाईलैंड के नोंथाबुरी शहर के 310 सामान्य स्कूलों के शिक्षकों को लिया गया, इस अनुसंधान मे पाया गया कि शिक्षकों मे अधिगम अक्षम बच्चों के प्रावधानों के बारे में आंशिक ज्ञान है। Thailand के शिक्षकों में अधिगम अक्षम बच्चों के प्रति अभिवृत्ति (Attitude) बहुत अच्छी हैं। मरवान, एम. ए. एस. (2013), अवरेनेस अबाउट आटिज्म अमंग स्कूल टीचर इन ओमानः अ क्रास– सेक्शनल स्टडी, इस अध्ययन में ओमान की राजधानी मस्कट के पब्लिक और प्राइवेट के 51 बेसिक शिक्षा स्कूलों (ग्रेड 1–5) के 150 शिक्षकों को लिया गया है। अध्ययन से पाया गया कि ओमान देश के मस्कट शहर के शिक्षकों में आटिज्म बच्चों के प्रतिअभिवृत्ति और उन बच्चों के सहायक उपकरण, मूल्यांकन, सम्प्रेषण के बारे में जानकारी बहुत कम है। बारका, एम. एम. (2013) टीचिंग स्टूडेंट्स विथ विजुअल इम्पैयरमेंट्स इन इंक्लूसिव क्लासरूमः अ केस स्टडी ऑफ़ वन सेकेंडरी स्कूल इन तंजानियां, यह अध्ययन सेकंड्री स्कूल के 4 शिक्षकों को शामिल किया गया जिसमे से 2 सामाजिक विज्ञान और 2 विज्ञान के शिक्षक थे। अध्ययन में पाया गया कि शिक्षकों को समावेशी शिक्षा और दृष्टि बाधित बच्चों के अधिगम आवश्यकता और अधिगम शैलियों में, पढ़ाने की विधि में और सहयोग के बारे में ज्ञान की कम जानकारी पायी गयी। हैमौर, ए. आई. एंड ओबैदत, वाई. एफ. (2013), स्कूल टीचर्स नॉलेज अबाउट आटिज्म इन सऊदी, इस अध्ययन में पाया गया कि आटिज्म बच्चों के बारे में ज्यादा ज्ञान मास्टर डिग्री शिक्षकों के पास था जबकि बैचेलर और डिप्लोमा के पास कम ज्ञान था। विशेष शिक्षकों के पास सामान्य शिक्षकों कि तुलना में अधिक ज्ञान था। कफोनोगो, एफ. एम. एंड बाली, टी. ए. (2013), एक्सप्लोरिंग क्लासरूम टीचर्स अवेरनेस प्यूपिल विथ लर्निंग डिसबिलिटीजरू फ़ोकसिंग ऑन पब्लिक प्राइमरी स्कूलस इन तंजानिया। इस अध्ययन से पता चला कि शिक्षकों में अधिगम अक्षम बच्चों को पहचानने की क्षमता नहीं है और जागरूकता भी बहुत कम है लेकिन शिक्षकों में अधिगम अक्षम बच्चों के मूल्यांकन और कौशल के बारे में 57 प्रतिशत शिक्षक जागरूक है। सावनी, एन. एंड बंसल एस. (2014) स्टडि ऑफ अवरेनेस ऑफ लर्निंग डिसएबिलिटीज़ एमंग एलीमेंट्री स्कूल टीचर, यह अध्ययन चंडीगढ़ के 50 प्राथमिक विद्यालय के शिक्षको पर किया गया, जिसमे 5–10 वर्ष

तक के अध्ययनरत् शिक्षको को शामिल किया गया। अध्ययन से पाया गया कि अध्यापको को अधिगम अक्षमता के बारे में अल्प ज्ञान हैं। श्रीवास्तव, पी० एंड भाष्कर वी. के. (2015), अवरेनेस ऑफ टिचर्स इन स्पेशल स्कूल एंड पैरेंटस ऑन स्कीम्स, फ़ैसिलिटिस एंड कनसेसन फॉर परसंस विथ हियरिंग इमपैरमेंट, इस अध्ययन मे 56 अध्यापको को लिया गया था जो कम से कम दो वर्ष से स्पेशल स्कूल मे पढ़ा रहे है और 56 अभिभावकों जिसके बच्चे श्रवण बाधित है और जिनका आयु 12 से 18 वर्ष है। अध्ययन से पाया गया कि अध्यापक और अभिभावकों के मध्य पढ़ाने कि विधि, एवं सम्प्रेषण की समुचित जागरूकता का अभाव है। एडवर्ड, जी. (2015) टीचर्स नॉलेज एंड परसिव चलेन्जैस ऑफ़ टीचिंग चिल्ड्रेन विथ आटिज्म इन तंजानिया रेगुलर प्राइमरी स्कूल, इस अध्ययन में तीन नियमित प्राथमिक स्कूल के 16 शिक्षकों को शामिल किया गया। अध्ययन में पाया गया कि 62 प्रतिशत शिक्षकों में आटिज्म बच्चों के विशेषताओं के बारे में कम ज्ञान था तथा 88 प्रतिशत शिक्षकों में आटिज्म बच्चों के पढ़ाने की विधि, अधिगम सामग्री तथा शिक्षक और माता–पिता के बीच सहयोग का कम ज्ञान था। शारी, एम. एंड वृंदा एम. एन. (2015), नॉलेज ऑफ़ प्राइमरी स्कूल टीचर्स इन आइडेटीफायिंग चिल्ड्रेन विथ लर्निंग डिसएबिलिटीज़, यह अध्ययन बैंग्लोर शहर के 16 स्कूलों के 200 प्राथमिक शिक्षकों को शामिल किया गया। अध्ययन में पाया गया कि अध्यापको में अधिगम अक्षमता के पहचान से सम्बंधित ज्ञान की कमी/अभाव है। शुक्ला, पी. एंड अग्रवाल, जी. (2015), अवरेनेस ऑफ लर्निंग डिसएबिलिटीज़ एमंग टीचर ऑफ़ प्राइमरी स्कूल, यह अध्ययन हरिद्वार के 15 स्कूलों के 68 प्राथमिक शिक्षकों को शामिल किया गया। अध्ययन में पाया गया कि 67 प्रतिशत शिक्षकों में अधिगम अक्षमता कि कोई जानकारी नहीं है, 20 प्रतिशत शिक्षकों में अधिगम अक्षमता की बहुत कम जानकारी है और 11 प्रतिशत शिक्षकों में अधिगम अक्षमता की जानकारी है। लिऊ, वाई. एट. आल. (2016), नालेज, एटिटयुड एंड पर्सेप्सन ऑफ़ आटिज्म स्पेक्ट्रम डिसबिलिटी इन अ स्ट्रेटीफाईड सैम्पलिंग ऑफ़ प्री स्कूल टीचर्स इन चाइना। अध्ययन में पाया गया कि 50 प्रतिशत शिक्षकों में आटिज्म स्पेक्ट्रम डिसार्डर के बारे मे ज्ञान था। 72–73 प्रतिशत शिक्षकों में आटिज्म बच्चों के देख–भाल, शिक्षा और वकालत के प्रति अभिवृत्ति सबसे अधिक थी। 60 प्रतिशत शिक्षकों में आटिज्म बच्चों के हस्तक्षेप के बारे में नहीं पता था। कुमार, एस. एंड डेविड, एच. बी. (2016), अ स्टडी ऑन दी अवेरनेस ऑफ़ बिहेवियरल इस्सुज ऑफ़ चिल्ड्रेन विथ इंटेलेक्चुअल डिसएबिलिटीज़ अमंग जनरल एजुकेशन टीचर इन इंक्लूसिव स्कूल्स, इस अध्ययन में चंडीगढ़ के समावेशी स्कूल के 60 सामान्य शिक्षकों को शामिल किया गया। जिसमें पाया गया कि चंडीगढ़ के हाईस्कूल और प्राथमिक शिक्षकों में बौद्धिक अक्षम बच्चों के व्यवहार कि जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। इस अध्ययन से जानकारी मिलती है कि चंडीगढ़ के नियमित स्कूल के शिक्षकों में बौद्धिक अक्षम बच्चों को पढ़ाने के लिए पर्याप्त ज्ञान और कौशल है। मौर्या, एम. (2017) समावेशी स्कूलों में विकलांगता सम्बन्धित जागरूकता का अध्ययन करना, जिसमें पाया कि सहायक उपकरण, सम्प्रेषण, शिक्षण विधि, मूल्यांकन आदि सम्बंधित जागरूकता थी। अमजद आई. ए. एंड एट. आल. (2020). टीचर्स अवेरनेस अबाउट इन्क्लूसिव एजुकेशन इन पंजाबः अ डिसक्रीप्तिव एन्क्यारी, इस अध्ययन का उद्देश्य समावेशी शिक्षा के बारे में शिक्षकों के जागरूकता के स्तर का पता लगाना था । अध्ययन से पता चला कि आई. ई. के बारे में शिक्षकों की समग्र जागरूकता मध्यम स्तर पर थी । I.E. को लागू करने के महत्व के बारे में उनकी जागरूकता उच्च स्तर पर थी, लेकिन I.E. से संबंधित नीतियों और परियोजनाओं के बारे में उनकी जागरूकता निचले स्तर पर थी।

परिणाम एवं निष्कर्ष

उपरोक्त साहित्य का अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट होता है समावेशी विद्यालयों के शिक्षकों में दिव्यांगता से सम्बन्धित 31.25 प्रतिशत अध्ययनों में जागरुकता थी, एवं 37.50 प्रतिशत अध्ययनों में जागरुकता बिल्कुल नही थी तथा 31.25 प्रतिशत अध्ययनों में कुछ जागरुकता थी। जबकि सहायक उपकरण (18.78 प्रतिशत), अध्यापन पद्धति (50 प्रतिशत), अध्यापन सामाग्री (37.50 प्रतिशत), सम्प्रेषण माध्यम (37.50 प्रतिशत), मूल्यांकन (31.25 प्रतिशत) संबन्धित जागरूकता का पाया गया। इन परिणामों के आधार पर यह नही कहा जा सकता कि समावेशी विद्यालयों के शिक्षको में दिव्यांगता सम्बन्धित जागरुकता बिल्कुल नही है क्योकि हाल ही के वर्षों में समावेशी शिक्षा के प्रति शिक्षकों कि नजरिया तेजी से बदला है लेकिन अभी और इस सम्बन्ध में जागरूक करने की आवश्यकता

है। जैसा कि नई शिक्षा नीति 2020 में देखने को मिला हैं। यह शिक्षा नीति ऐसे लक्ष्यों को लेकर आगे बढ़ती है जिससे भारत देश के किसी भी बच्चे के सीखने और आगे बढ़ने के अवसरों में उसकी जन्म या पृष्ठभूमि से संबंधित परिस्थितियों बाधक न बन पायें।

सन्दर्भ सूची

1. Al-Sharbati, M. M., Al-Farsi, Y. M., Ouhtit, A., Waly, M. I., Al-Shafaee, M., Al-Farsi, O., ... & Al-Adawi, S. (2013). Awareness about autism among school teachers in Oman: A cross-sectional study. *Autism*, 19(1), 6-13. Retrieved from https://journals.sagepub.com/doi/abs/10.1177/1362361313508025 on 27/6/22
2. Amjad, A. I., & Manzar-Abbas, S. S. (2020). Teachers' Awareness about Inclusive Education in Punjab: A Descriptive Enquiry. *Journal of Inclusive Education*, 4. Retrieved from http://journal.aiou.edu.pk/journal1/index.php/JIE/article/viewFile/419/106 on 21/06/22
3. Dapudong, R. C. (2013). Knowledge and attitude towards inclusive education of children with learning disabilities: The case of Thai primary school teachers. *Academic Research International*, 4(4), 496. Retrieved from https://portal.qader.org/cached_uploads/download/2018/12/12/knowlegde-and-attituade-towards-inclusive-education-of-children-with-learning-disabilities-1544600125.pdf on 22/06/22
4. Edward, G. (2015). Teachers' knowledge and perceived challenges of teaching children with autism in Tanzanian regular primary schools. *International Journal of Academic Research and Reflection*, 3(5), 36-47. Retrieved from http://www.idpublications.org/wp-content/uploads/2015/05/TEACHERS%E2%80%99-KNOWLEDGE-AND-PERCEIVED-CHALLENGES-OF-TEACHING-CHILDREN-WITH-AUTISM-IN-TANZANIAN-REGULAR-PRIMARY-SCHOOLS.pdf on 26/06/2022
5. Gandhimathi, U., & Eljo, J. O. (2010). Awareness about learning disabilities among the primary school teachers. *Cauvery Research Journal*, 3(1), 71-78. Retrieved from https://scholar.google.com/scholar?hl=en&as_sdt=0%2C5&q=Awareness+about+learning+disabilities+among+the+primary+school+teachers&btnG= on 20/06/2022
6. Gateru, W. A. (2011). Teachers' awareness and intervention for primary school pupils with learning disabilities in inclusive education in Makadara Division Kenya. Unpublished Masters Thesis of Kenyatta University. Retrieved from https://ir-library.ku.ac.ke/handle/123456789/954 on 25.06.2022
7. Haimour, A. I., & Obaidat, Y. F. (2013). School teachers' knowledge about autism in Saudi Arabia. *World Journal of Education*, 3(5), 45-56. Retrieved from https://eric.ed.gov/?id=EJ1158786 on 24/06/2022
8. http://educationandnet.blogspot.in/2017/02/blog-post.htmlon 12/06/2022.
9. http://www.academia.edu/19789763/Inclusive_Education_for_Children_with_Visual_Impairment_and_Role_of_Teacher on 20/04/2022
10. http://www.rachanakar.org/2015/05/vishisht-shaikshik-aavashyakataon.html on 24/04/2022.
11. https://ijip.in/articles/a-study-on-the-awareness-of-behavioral-issues-of-children-with-intellectual-disabilities-among-general-education-teachers-in-inclusive-schools/ on 22/06/2022

12. https://www.jyu.fi/edu/kasvatustieteen-paivat2013/rinnakkaiset-teemaryhmat-symposiumit-ja-tyopajat/symposiumit/3. international-perspectives-on-inclusive-educationon 22/05/2022.
13. Kafonogo, F. M., & Bali, T. A. (2013). Exploring Classroom Teachers' Awareness of Pupils with Learning Disabilities: Focusing on Public Primary Schools in Tanzania. *Journal of education and practice*, 4(24). Retrieved from http://iiste.org/Journals/index.php/JEP/article/view/8897 on 24/06/2022
14. Kakabaraee, K., Arjmandnia, A. A., & Afrooz, G. A. (2012). The study of awareness and capability of primary school teachers in identifying students with learning disability in the province of Kermanshah. Procedia-Social and behavioral sciences, 46, 2615-2619. Retrieved from https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S1877042812016631. On 24/06/2022
15. Kumar, P. (2013). Inclusive education for children with visual impairment and role of teacher. Retrieved from https://thebastion.co.in/politics-and/education/inclusive-education-for-the-visually-impaired/ on 30/06/22
16. Kumar. S, &David. H.B. (2016). A Study on the Awareness of Behavioural Issues of Children with Intellectual Disabilities among General Education Teachers in Inclusive Schools. *The International Journal of Indian Psychology* Volume 04, Issue 1, Retrieved from
17. Liu, Y., Li, J., Zheng, Q., Zaroff, C. M., Hall, B. J., Li, X., & Hao, Y. (2016). Knowledge, attitudes and perceptions of autism spectrum disorder in a stratified sampling of preschool teachers in China. BMC psychiatry, 16(1), 1-12. Retrieved from https://bmcpsychiatry.biomedcentral.com/articles/10.1186/s12888-016-0845-2 on 27/06/2022
18. Maurya, M. K. (2017). Study Of Disabilities Awareness in Inclusive Education. (Dissertation).
19. Mwakyeja, B. M. (2013). Teaching students with visual impairments in inclusive classrooms: A case study of one secondary school in Tanzania (Master's thesis). Retrieved from https://www.duo.uio.no/bitstream/handle/10852/36642/Masterxsx Thesis.pdf?...1 on
20. NEP (2020) Retrieved https://www.google.com/amp/s/m.uttamhindu.com/article/national-education-policy-2020-aspires-to-bring-inclusive-excellence-in-school-education/151710/amp on 27/06/2022
21. Paivat, K. (2013). International perspective on inclusiveeducation. Retrieved from
22. Sawhney, N., & Bansal, S. (2014). Study of awareness of learning disabilities among elementary school teachers. In Conference: International Education Confer'Education as a Right across the Levels: Challenges, Opportunities and Strategies, New Delhi. Retrieved from https://d1wqtxts1xzle7.cloudfront.net/37861040/Learning_disability.Jamia_Milia_March14-with-cover-page-v2.pdf?Expires=1656570443&Signature=SxF7FzD~6UTt6eUmefb7GHyD6zb8mlfoBxBa2VexvKjopZSsHmtMqbkQaaz-NJzaVCT5AHgCaVBzyLPlAKvlmtQZvzi24fv5bT0VsuBie5mNedKyKEJga58aZZpBFrKdfpqgUYDWJcEdZ ITQqkDxTUIDVm8ZLht4BHvsl9NNNGwwzotpoIdK3Lf4BRh6mZHC6x00dfX2k78lJYRrqJEEvcbWU4WrWk1jaK8JnZpxD31Ya93de~PhZmDbFWMayCKLTUrBgs3pbGOpYi7-PHg75IQh2QSL6kwT3qR3s~n9BLfAa~rkkbPL~GV9LDywRJPX4Bqw5kopiSkZdxKNFkALJw__&Key-Pair-Id=APKAJLOHF5GGSLRBV4ZA on 28/06/2022

23. Shari, M., & Vranda, M. N. (2015). Knowledge of primary school teachers in identifying children with learning disabilities. Disability, CBR & Inclusive Development, 26(3). Retrieved from https://web.s.ebscohost.com/abstract?site=ehost& scope=site&jrnl=22115242&AN=149952111&h=f8p%2bZAQmZui2KL%2bMEMDNDWJkYCYK4X9xtEJ1OYQtZmQHJFctb2vmXeT2AFqsecVFgElu5X5yzKWNEOVlfVefQ%3d%3d&crl=c&resultLocal=ErrCrlNoResults&resultNs=Ehost&crlhashurl=login.aspx%3fdirect%3dtrue%26profile%3dehost%26scope%3dsite%26authtype%3dcrawler%26jrnl%3d22115242%26AN%3d149952111 on 20/06/2022

24. Shukla, P., & Agrawal, G. (2015). Awareness of learning disabilities among teachers of primary schools. Online Journal of Multidisciplinary Research, 1(1), 33-38. Retrieved from https://www.researchgate.net/profile/Gaurav-Agrawal-30/publication/283574444_Awareness_of_Learning_Disabilities_among_Teachers_of_Primary_Schools/links/56408c3608aec502e46dc048/Awareness-of-Learning-Disabilities-among-Teachers-of-Primary-Schools.pdf on 18/06/2022

25. Srivastava, P. & bhashkar, V. K. (2015). Awareness of Teachers in Special Schools and Parents on Schemes, Facilities and Concessions for Persons with Hearing Impairment. Online *International Interdisciplinary Research Journal*, {Bi-Monthly}, ISSN 2249-9598, Volume-V, July 2015 Special Issue. Retrieved from https://www.academia.edu/37515308/Awareness_of_Teachers_in_Special_Schools_and_Parents_on_Schemes_Facilities_and_Concessions_for_Persons_with_Hearing_Impairment on 22.06.2022

****